रिपोर्ट

जनवरी-फरवरी, 2016 **में बिहार के नालंदा जिले में बीसीजी**, **ओपीवी तथा पेंटावैलेंट टीकाकरण के बाद दो मौतों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी।**

1. परिचय

26 फरवरी 2016 को बिहार के राज्य ईपीआई अधिकारी की ओर से पिछले दो माह में पेंटावैलेंट वैक्सीन के चलते हुए एईएफआई मामलों की जांच के लिए एक अनुरोध प्राप्त हुआ था। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से एक जांच टीम का गठन 01 मार्च 2016 को किया गया था और टीम ने 04 मार्च को मामले की जांच की। टीम में शामिल थे

1. ***प्रोफेसर एपी दुबे, बाल चिकित्सा विभाग, मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली।***
2. ***श्री राज शेखर, ड्रग इंस्पेक्टर, सीडीएससीओ, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता;***
3. ***डॉ नरेंद्र कुमार, जोनल एईएफआई, सलाहकार पूर्व, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय***
4. डॉ दीपक पोल्पकारा, एसोसिएट एडवाइजर-एईएफआई, एईएफआई सचिवालय, आईटीएययू।

नालंदा से जनवरी-फरवरी 2016 में एईएफआई का केवल एक गंभीर मामला प्राप्त हुआ था। यात्रा के दौरान दूसरे मामले का सीआरएफ व अन्य विवरण प्राप्त हुआ।

2. **संचालित की गई गतिविधियां**

जांच के दौरान 04 मार्च 2016 को निम्नलिखित गतिविधियां संचालित की गईं :

दौरा किए गए स्थान	**गतिविधियां**
राज्य स्वास्थ्य सोसाइटी कार्यालय, पटना	टीम का परिचय, गतिविधियों की योजना, एईएफआई निगरानी जानकारी का संग्रह
सिविल सर्जन कार्यालय, नालंदा	जनवरी के अंतिम सप्ताह में और 12 फरवरी 2016 को हुई दो एईएफआई मौतों पर वार्ता
पीएचसी एस	कोल्ड चेन तथा वैक्सीन भंडारण का मूल्यांकन - आईएलआर तथा डीएफएस का निरीक्षण, तापमान रिकॉर्ड, वैक्सीन तथा लॉजिस्टिक्स व दैनिक मुद्दों का रजिस्टर, कोल्ड चेन का संचालन करने वाले का साक्षात्कार।

	घटनाओं के सिलसिले व अन्य को सुनिश्चित करने के लिए एएनएम व एमओ का साक्षात्कार।
गांव बीएस (बच्चा एम)	बच्चे एम के माता-पिता का साक्षात्कार व शव-परीक्षा का प्रशासित मौखिक फॉर्म साक्षात्कार किए गए एडब्ल्यू तथा आशा। उसी दिन टीकाकरण किए गए अन्य बच्चों का परीक्षण। स्थानीय गांवों का भ्रमण और विभिन्न लोगों से बातचीत, जिसमें एडब्ल्यू केंद्र पर टीकाकरण किए गए अन्य बच्चाेंं के माता-पिता शामिल हैं।
गांव डी (बच्चा बी)	प्रशासित मौखिक शव परीक्षा फार्म। एकत्रित किए गए प्रासंगिक स्वास्थ्य रिकार्ड, मौत के लिए जिम्मेदार घटनाओं के अनुक्रम की स्थापना की। उसी दिन और उसी जगह पर टीकाकरण किए जाने वाले अन्य बच्चों का परीक्षण। गांव में अन्य बीमारियों के बाबत पड़ताल।
पीएचसी आर	टीका और रसद भंडारण की स्थिति की जांच के लिए कोल्ड चेन कक्ष का निरीक्षण। बच्चे बी के टीकाकरण और अन्य घटनाक्रम के संबंध में एएनएम का साक्षात्कार किया।

प्रकरण सारांश- बच्चा एम

गांव बीएस के आंगनबाड़ी केंद्र में दो माह के बच्चे को बीसीजी, पेंटावैलेंट-1 और ओपीवी-1 का टीका 27 जनवरी 2016 को सुबह 10 बजे दिया गया। टीकाकरण के बाद बच्चे की 20 मिनट तक निगरानी की गई उसके बाद घर भेजा गया। दिनभर वह ठीक रहा और उसे कई बार स्तनपान कराया गया। वह अपराह्न 4:30 बजे सोया और रात 8 बजे के करीब जगा।

बच्चे का जन्म के समय वजन अज्ञात है, लेकिन उसकी मां के अनुसार उसका वजन औसत था, उसकी पैदाइश घर पर ही सामान्य प्रसव से समय पर हुई थी और जन्म के समय कोई दिक्कत नहीं थी। वह जन्म के समय से ही ठीक से मां का दूध पी रहा था। मां के अनुसार बच्चे को किसी तरह का बुखार, डायरिया, अधिक पसीना, मल में परिवर्तन, सुस्ती, सांस लेने में तकलीफ, अत्यधिक रोना, उल्टी आदि की कोई समस्या नहीं थी।

रात में जब बच्चा मृत पाया गया, उसने एक शर्ट, स्वेटर और पाजामा पहन रखी था और अपनी मां के साथ खाट पर सोया हुआ था। वह अपनी बायीं ओर लेटा हुआ खाट को छूट रहा था और उसका मुंह मां की

ओर था, जो कि उसकी बायीं ओर खाट पर ही सोई हुई थी। सुबह करीब 5 बजे जब मां की नींद बच्चे को स्तनपान कराने के लिए खुली तो उसने उसे मृत पाया। बच्चे की नाक और मुंह से खून निकल रहा था और शरीर के बायें हिस्से पर नीला/काला मलिनकरण था, जो छूने में नर्म और स्पंजी था। जैसा कि मां द्वारा बताया गया कि परिवार ने कमरे को गरम करने के लिए अंगीठी का इस्तेमाल किया था, लेकिन रात में करीब 10 बजे अंगीठी को हटा दिया गया था।

परिवार निचले सामाजिक आर्थिक वर्ग के अंतर्गत आता है और एक संयुक्त परिवार में रहता है। पति और पत्नी दोनों दिहाड़ी मजदूर हैं। उनके पांच वर्ष का एक बच्चा है। परिवार 10x10 वर्ग फुट के एक कमरे में सोया था, जिसमें हवा की आवाजाही ठीक नहीं थी। उसमें भी चारपाई के साथ अन्य घरेलू सामान थे। ठंड से बचने के लिए रजाई का इस्तेमाल किया जा रहा था।

28 जनवरी 2016 को 12:15 पर जिला अस्पताल में पोस्टमार्टम किया गया।
पोस्टमार्टम रिपोर्ट में सामने आया कि मौत की वजह ठंड है।

फील्ड जांच:
गांव बीएस में टीकाकरण सत्र 27 जनवरी 2016 को किया गया था। एक सत्र आंगनबाड़ी केंद्र एक्स और दूसरा सत्र आंगनबाड़ी केंद्र वाई में किया गया। दोनों ही सत्रों में एक ही एएनएम ने टीकाकरण किया - पहले एडब्ल्यूसी एक्स में सुबह और उसके बाद एडब्ल्यूसी वाई में दोहपर बाद। दोनों सत्र स्थानों पर अलग-अलग वैक्सीन कैरियर का उपयोग किया गया था।

टैली शीट और आशा के अनुसार एडब्ल्यूसी एक्स के टीकाकरण सत्र में उस दिना पांच बच्चों का टीका लगना था लेकिन केवल चार बच्चे ही टीकाकरण के लिए पहुंचे थे। टीकाकरण किए गए बच्चों की जांच में एक कम वजन का पाया गया, लेकिन कुल मिलाकर वह स्वस्थ था। अन्य दो बच्चों की जांच में वे स्वस्थ पाए गए।

जब गांव में बच्चे की मौत की सूचना फैली, बताया गया कि एडब्ल्यूसी संख्या वाई पर टीकाकरण किए गए 3-4 बच्चों में मामूली एईएफआई सामने आया और उनका गांव के स्थानीय डॉक्टर ने इलाज किया और वे अब पूरी तरह स्वस्थ हैं। केवल एक बच्चे में मामूली एईएफआई की शिकायत पकड़ी जा सकी। एडब्ल्यूसी कार्यकर्ता, आशा और अन्य लोगों का साक्षात्कार किया गया और इसमें कहा गया कि एएनएम एक अच्छी कार्यकर्ता है और गांव में उसके टीकाकरण अभियान में कभी कोई समस्या नहीं आई। स्थानीय लोगों के

साथ बातचीत में सामने आया कि गांव में पिछले तीन में कभी किसी तरह का कोई प्रकोप सामने नहीं आया और लगभग सभी बच्चे स्वस्थ हैं।

पीएचसी एस पर कोल्ड चेन उपकरणों की जांच की गई। एक ही कोल्ड चेन कक्ष का उपयोग पीएचसी और शहरी बिहार शरीफ दोनों द्वारा किया जा रहा था लेकिन उपकरण तथा वैक्सीन भंडार का रखरखाव अलग-अलग किया गया था। पीएचसी एस के पास एक छोटा डीएफ तथा एक बड़ा आईएलआर था। वहां कोई वैक्सीन गैर इस्तेमाल की अवस्था में नहीं पाया गया। एमओ की ओर लॉगबुक की जांच हर 10 से 15 दिनों पर की गई थी। कुल मिलाकर, कोल्ड चेन काफी अच्छी तरह से बनाए रखा गया था।

प्रभाव : **मौत का कारण हो सकता है** 1. **एसआईडीएस या** 2. **दुर्घटनावश श्वासावरोध**

सारांश-बच्चा बी

पीएचसी आर के अंतर्गत आंगनबाड़ी केंद्र जेड पर 1.5 माह के बच्चे बी को दिनांक 12/02/2016 को सुबह 11 बजे ओपीवी तथा पेंटावैलेंट की पहली खुराक दी गई। माता-पिता के अनुसार, बच्चे को उसकी मां और दादी माँ टीकाकरण के लिए लेकर गई थीं, और वहां टीका लगने के करीब 20 मिनट तक उसकी निगरानी के बाद घर लाया गया। बच्चे ने आखिरी बार 3:30 पर स्तनपान किया और उसके 10 मिनट बाद ही मुंह तथा नाक से खून बहने के साथ ही उसकी मौत हो गई। मां के अनुसार बच्चे को टीकाकरण के पहले या बाद में किसी तरह का बुखार, डायरिया, अधिक पसीना, मल में परिवर्तन, सुस्ती, सांस लेने में तकलीफ, अत्यधिक रोना, खराब स्तनापान, उल्टी आदि की कोई समस्या नहीं थी। माता-पिता की इच्छा के अनुसार पोस्टमार्टम नहीं किया गया था। बच्चे का वजन टीकाकरण के दिन 3.5 किलोग्राम था। बच्चा परिवार में पहला था। परिवार कमजोर सामाजिक आर्थिक हैसियत के अंतर्गत आता है। मकान आधा पक्का है और आसपास सफाई नहीं थी।

फील्ड जांच : एक ही पेंटावैलेंट शीशी से छह अन्य बच्चों का टीकाकरण किया गया था। इनमें से कुछ की जांच की गई और वे स्वस्थ पाए गए। स्थानीय लोगों के साथ बातचीत में पिछले दो महीनों में किसी संक्राम रोग के फैलने की बात सामने नहीं आई।

12 फरवरी को बच्चे को टीका लगाने वाली एएनएम का साक्षात्कार किया गया। उसने कहा कि उसे आशा के द्वारा शाम को 4:00 बजे बच्चे की मौत की सूचना दी गई थी। उसने कहा कि उसे मृतक के परिवार

द्वारा परेशान किया जा रहा था। परिवार के लोगों ने उस पर बुरा व्यवहार करने का आरोप लगाया। चिकित्सा अधिकारी ने कहा कि परिवार मौत के बाद बेहद आक्रोशित था।

पीएचसी आर पर कोल्ड चेन का मूल्यांकन किया गया था। वहां दो छोटे आईएलआर तथा बड़े डीएफ थे। वहां ढीले अल्कोहल कॉलम के साथ थर्मामीटर भी पाए गए थे, जिसकी वजह से शायद उस दिन तापमान 9 डिग्री से अधिक दर्ज किया गया। बड़ डीएफ शायद एक आईएलआर था जिसके डीएफ में तब्दील किया गया था। निरीक्षण के दौरान वहां का तापमान -5 पाया गया। स्टॉक रजिस्टर और दैनिक मुद्दों के रजिस्टरों को ठीक से रखा गया था। कुल मिलाकर, कोल्ड चेन और टीकाकरण रसद को काफी अच्छी तरह से बनाए रखा गया था।

प्रभाव : **मौत का कारण** -1. **अधूरा या** 2. **एसआईडीएस**

<u>निष्कर्ष</u>

1. बच्चे एम की मौत के मामले में कारण सडेन इन्फैंट डेथ सिंड्रोम (एसआईडीएस) या आकस्मिक श्वासावरोध लगता है।
2. बच्चे बी के मामले में, हालांकि पोस्टमार्टम नहीं कराया गया था, मौत का कारण अनिर्णायक है। मौत के सभी मामलों में पोस्टमार्टम के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
3. वैक्सीन भंडारण और प्रशासनिक व्यवस्था संबंधी कार्यक्रम में कोई त्रुटि स्पष्ट नहीं है।
4. विश्वास बहाली के उपायों के माध्यम से दोनों ही गांवों में एएनएम को समर्थन देकर टीकाकरण सत्र को पुनः आरंभ कराया जाना चाहिए।